प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर में बायोकम्प्यूटिंग पर कार्यशाला व प्रशिक्षण का आयोजन

पंतनगर। 09 अक्टूबर, 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान एवं आनुवंशिक प्रौद्योगिकी विभाग में स्थित जैव सूचना केन्द्र द्वारा 'ए जरनी टूवार्ड्स सिस्टम बायोलॉजी : बायोकम्प्यूटिंग ऑफ हाई थ्रुपुट ऑमिक्स डाटा' विषय पर चार-दिवसीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का, महाविद्यालय के पर्यावरण विभाग के सभागार में आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव, डा. ए.पी. शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, के अंतरविषयी जैव तकनीकी एकक के समन्वयक, प्रो. ए.यू.खान, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अधिष्ठाता विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, डा. ए.के. शुक्ला; कार्यक्रम आयोजक एवं विभागाध्यक्ष, डा. संदीप अरोरा, एवं कार्यक्रम प्रभारी, डा. गौहरताज, भी मंचासीन थे।

डा. ए.पी. शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि पंतनगर विश्वविद्यालय अपनी स्थापना से ही कृषि के विकास में अपने शिक्षण, शोध एवं प्रसार कार्यों से अग्रणी रहा है। इसके अथक प्रयास से देश में हरित क्रांति सफलतापूर्वक प्रारम्भ हुयी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय केवल कृषि के क्षेत्र में ही नही अपितु नयी प्रजातियों व नये जीन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है, जो कृषि के क्षेत्र में रोग-रोधी, उच्च उत्पादन के साथ गुणवत्तायुक्त किस्में और नये शोध एवं नये सुधार लाने में सहयोग प्रदान कर रहा है। डा. शर्मा ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग कर रहे वैज्ञानिक एवं शोधकर्मी आनुवंशिकी के क्षेत्र में नये आयाम जोड़ेंगे, जो जैव आनुवंशिकी के क्षेत्र में नयी क्रांति का उद्भव करेंगे। उन्होंने ओमिक्स द्वारा प्राप्त आंकड़ों को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि ये आंकड़े आने वाले समय में जीव विज्ञान और जैवसंगणन में हो रहे शोध को सहयोग प्रदान करेंगे।

डा. असद ए. खान ने कार्यशाला के विषय की सराहना करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को इसकी महत्ता के बारे में बताते हुए आधुनिक शोध हेतु इसको कारगर बताया। मानव शरीर में प्रोटीन के विभिन्न कार्यों की जानकारी देते हुए बीमारियों के उपचार में इसकी महत्ता बताई। डा. खान द्वारा कैंसर जैसी घातक बीमारी के उपचार में प्रयोग में ली जाने वाली तकनीक, माइक्रोबायोम, पर भी प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. ए.के. शुक्ला ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य एवं रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। अंत में कार्यक्रम प्रभारी डा. गौहरताज द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया। इस चार दिवसीय कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से २२ प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में देश के ख्यातिलब्ध वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को व्याख्यान दिये जायेंगे।

बायोकम्प्यूटिंग कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मंचासीन कुलसचिव, डा. ए.पी. शर्मा, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य वैज्ञानिक।